सम - सीमांत उपयोगिता नियम :

सर्वप्रथम जर्मन अर्थशास्त्री गोसेन (Gossen) ने सम-सीमांत उपयोगिता नियम की चर्चा की थी। इसलिए इस नियम को गोसेन का दूसरा नियम भी कहते हैं। मार्शल ने भी यह कहा कि जब उपभोक्ता एक से अधिक वस्तुओं पर अपनी सीमित आय को व्यय करता है, तब अधिकतम संतुष्टि की प्राप्ति के लिए उसे सम-सीमांत उपयोगिता का सहारा लेना पड़ता है, इस नियम को अधिकतम संतुष्टि का (Law of maximum satisfaction) या प्रतिस्थापन का नियम (Law of subtitution) या आनुपातिकता का नियम (Law of Proportionality) आदि नामों से जाना जाता है।

सम - सीमांत उपयोगिता नियम वास्तव में उपयोगिता ह्रास नियम पर आधारित है, सीमांत उपयोगिता ह्रास नियम यह बताता है कि जब कोई उपभोक्ता अपनी आवश्यकता की संतुष्टि के लिए उत्तरोत्तर किसी वस्तु की क्रमशः अधिक इकाइयों का प्रयोग करता है, तब उससे प्राप्त होनेवाली उपयोगिता घटती जाती है। अतः कोई भी विवेकशील उपभोक्ता अपनी पूरी आय को किसी एक ही वस्तु पर व्यय नहीं करेगा वह अपनी सीमित आय का प्रयोग इस तरह से विभिन्न वस्तुओं की खरीद पर करेगा को उसे अंतिम प्रयोग से समान संतुष्टि की प्राप्ति हो इस क्रम में वह अधिक संतुष्टि की प्राप्ति के लिए अपने व्यय को कम उपयोगी वस्तु से हटाकर अधिक उपयोगी वस्तु की ओर ले जाएगा दूसरे शब्दों में वस्तु का प्रतिस्थापन करेगा जब तक सभी उपयोगी की अंतिम इकाई के प्रयोग से उसे समान संतुष्टि न हासिल होने लगे इसलिए इसे प्रतिस्थापन का नियम कहा जाता है, इसे अधिकतम संतोष का नियम भी कहा जाता है, क्योंकि इसी नियम का सहारा लेकर उपभोक्ता अपनी संतुष्टि को अधिकतम करने वाली चेष्टा करता है।

Scanned with CamScanner

प्रो० मार्शल का नाम सम-सीमांत उपयोगिता नियम से ढंग से जुड़ा हुआ है, क्योंकि उन्होंने इसकी विशद व्याख्या प्रस्तुत की है, प्रो० मार्शल के अनुसार यदि एक व्यक्ति के पास कोई ऐसी वस्तु है, जिसे वह अनेक प्रयोगों में ला सकता है तो वह उसे उन प्रयोगों के बीच, इस प्रकार वितरित करेगा ताकि सभी प्रयोगों में, उसकी सीमांत उपयोगिता बराबर रहे उन्होंने एक ऐसी वस्तु की चर्चा की है जिसका अनेक प्रयोग या अनेक वस्तुओं के उपभोग के लिए प्रयोग हो सकता है वह वस्तु मुद्रा है, मुद्रा का प्रयोग अनेक कार्यों के संपादन के लिए या अनेक वस्तुओं के उपभोग के लिए किया जा सकता है। वह वस्तुओं पर व्यय की गई मुद्रा के सीमांत प्रयोग से उसे समान संतुष्टि मिलनी चाहिए दूसरे शब्दों में सम-सीमांत उपयोगिता नियम में यह बताया गया है, कि उपभोक्ता को विभिन्न वस्तुओं पर इस प्रकार खर्च करना चाहिए कि विभिन्न वस्तुओं पर किए गये अंतिम इकाई के व्यय से समान संतुष्टि मिले तथा विभिन्न वस्तुओं की सीमांत उपयोगिताएं तथा उनके मूल्य अनुपात बराबर हो जैसे यदि उपभोक्ता दो वस्तुओं A तथा B पर या उससे अधिक वस्तुओं पर अपनी पूरी आय खर्च कर रहा है तो सम-सीमांत उपयोगिता नियम के आधार पर उसे उस स्थिति में अधिक संतुष्टि की प्राप्ति होगी जब

$$\frac{MU\ of\ A}{Price\ of\ A} = \frac{MU\ of\ B}{Price\ of\ B} = \frac{MU\ of\ N}{Price\ of\ N}$$ हो।

इस प्रकार जब वस्तुएँ दो या दो से अधिक हो इस शर्त की प्राप्ति होने पर ही अधिकतम संतुष्टि हासिल की जा सकती है।